ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 104-105
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

पर्यावरण संरक्षण में मगध विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के उपाय

सुमन कुमारी

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), भारत

Received- 05.10.2019, Revised- 10.10.2019, Accepted - 15.10.2019 E-mail: tanishkshekher@gmail.com

सारांश : *सभी जीव तथा स्वयं मनुष्य पर्यावरण में अन्तःसम्बन्ध स्थापित करता है । पर्यावरण के पदाथों और उफर्जा से ही इनका निर्माण हुआ है । पर्यावरणीय पदाथों से संपोषित होकर ही ये प्रजनन द्वारा अपनी संतती कायम रखते हैं । प्रजनन के क्रम में आनुवांशिक अनुकूलन के द्वारा जैव विविधता विकसित होती है । जब जीव की मृत्यु होती है तो वे उसी में विलीन हो जाती हैं । पर्यावरण पर पड़ने वाले प्राकृतिक या मानवजनित प्रभावों विभिन्न प्रकार की विदाओं के रूप परिलक्षित होते हैं । क्योंकि इनके संतुलन में तनिक भी विचलन समस्याएँ पैदा करते हैं । आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से सम्बन्ध मानव के लिए पर्यावरण का अध्ययन सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है । इसके महत्त्व को अग्रलिखित बिन्दुओं के द्वारा भली–भाँति समझा जा सकता है ।*

कुंजी शब्द – पर्यायवरण, प्रत्यक्ष, बाध्य दशा, धर्म, आदर्श, नैतिक परम्पराएँ, जनजातियाँ, लोकाचार, प्रथाएँ।

जीवन का अस्तित्व बनाये रखने के लिए पर्यावरण का महत्व आवश्यक है। प्रत्येक जीव का सृजन, संपोषण, निरन्तरता पर्यावरण से ही संचालित है और अन्ततः इसी में वह समा जाता है। आज विभिन्न रूपों में जीवन का संरक्षण जैसे वन्य–जीवन संरक्षण तथा जैव विविधता का संरक्षण आदि पर्यावरण के अध्ययन के माध्यम से किये जा रहे हैं। मानव का इस धरा पर अस्तित्व बनाये रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से पर्यावरण का अध्ययन आवश्यक है।

प्राकृतिक संतुलन को बनाये रखने के लिए पर्यावरण के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। मानव हसतक्षेप से प्रकृति का अपना संतुलन अनेक कारणों से बिगड़ रहा है। यह असंतुलन मानव की सम्पत्ति और जन हानि का कारण बनता जा रहा है। अतएव इस संतुलन को कम–से–कम विचलित किया जाय या पुनः संतुलन स्थापित किया जाय ताकि मानव प्रजाति की निरन्तरता सुनिश्चित की जा सके। इस दृष्टि से पर्यावरण अध्ययन की अत्यावश्यकता है ताकि वह संसाधनों के समुचित प्रयोग द्वारा प्रकृति संतुलन को बनाये रख सके।

मानव को प्रगतिशील बनाने के लिए पर्यावरण का संरक्षण आवश्यक है। पर्यावरण अध्ययन और पर्यावरण संसाधनों के सम्बन्धें के उचित आकलन के द्वारा स्थितियों का उचित प्रकार से सामना किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण प्रबन्धन में, मानव जिज्ञासा एवं उनके समाधन में तथा अधिगम एवं शिक्षा के क्षेत्रा में पर्यावरण का बहुत बड़ा महत्व है । इन सारे तथ्यों के आधर पर यह कहा जा सकता है कि मानव जीवन में पर्यावरण का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है।

वर्तमान समय में लगभग सभी लोग पर्यावरण के बारे में बातचीत करते हें लेकिन केवल कुछ ही लोग ऐसे हैं जो यह जानते हें कि क्या करने की आवश्यकता है तकि कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनको अभी इस क्षेत्रा में वास्तविक अनुभव प्राप्त करना है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि पर्यावरण चेतना अभियान को वास्तवित रूप में लोगों को शिक्षित करने के स्थान पर राजनीतिक लाभ के लिए अधिक प्रयोग किया गया। लगभग सभी वर्ग के लोगों ने पर्यावरण को वासतविक जीवन की आवश्यकता न मानकर इसे पफैशन के रूप में स्वीकार कर लिया है जबकि इसके दुरूपयोग से हमारे जीवन तथा सुरखा दोनों को ही खतरा है। हैनरी डी. थोरू ने सत्य ही कहा है– ''एक उपर्युक्त गृह की अनुपस्थिति में एक सुन्दर घर की क्या उपयोगिता है।'' यदि हम आज इस दिशा में कोई कदम उठाते हैं तो इसका परिणाम हमें अगले 40–50 वर्षो में देखने को मिलेगा।

पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के लिए अग्रलिखित कदम उठाये जा सकते हैं–

1. छात्राों को पर्यावरण क्षेत्रा में अपना कैरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिये।
2. टी.वी., पत्रा–पत्रिकाओं आदि संचार के माध्यमों से लोगों को पर्यावरण ज्ञान देना चाहिये।
3. वृक्षों की महत्ता को धर्म से जोड़कर उनके संरक्षण का प्रयास किया जाना चाहिये।
4. जनता की भागीदारी से किये जाने वाले कार्यक्रमों में सामाजिक वानिकी आदि पर बल दिया जाना चाहिए।
5. इस क्षेत्रा में कार्यरत स्वयं सेवी संस्थाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
6. पर्यावरण सम्बन्धी महत्वपूर्ण दिवसों पर अच्छे कार्यक्रमों द्वारा लोगों को जोड़ने का प्रयास करना चाहिये।
7. पद यात्राा, रैली, जनसभा, प्रदर्शनी, लोकनृत्य,

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

नुक्कड़–नाटक, वाद–विवाद, पोस्टर प्रतियोगिता आदि के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना अभियान चलाया जा सकता है।

8. पर्यावरण–क्षेत्रों में कार्य कर रहे व्यक्ति का संस्थानों की उपलब्धि के लिए पुरस्कार का प्रावधन होना चाहिये।

9. मानव व पर्यावरण के बीच सन्तुलन स्थापित रखने के लिए उत्साहवर्धी राष्ट्रीय नीति घोषित करनी चाहिये।

पर्यावरण संरक्षण के लिए किये गये मुख्य सम्मेलन तथा मीटिंग पर्यावरण संरक्षण को साकार करने के लिए समय–समय पर विभिन्न सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित किये जाते रहे हैं। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों का विवरण संक्षेप में आगे प्रस्तुत किया जा रहा है –

1. पृथ्वी सम्मेलन– 3–14 जून, 1992 में रियो सम्मेलन 'पर्यावरण व विकास' पर आयोजित किया गया। इसकी महत्ता के कारण इसे 'पृथ्वी सम्मेलन' के नाम से भी पुकारते हैं। इस ऐतिहासिक सम्मेलन में विश्व के 170 राष्ट्राध्यक्षों व शासनाध्यक्षों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में जहां एक ओर परम्परागत समस्याओं जैसे– वन क्षेत्रा की कमी, ग्रीन हाउस का बढ़ता प्रभाव, ओजोन परत का विघटन, शीत उपकरणों में क्लोरो–फ्रलोरो कार्वन्स के स्थान पर नई टेक्नोलॉजी, बढ़ती जनसंख्या, ईंधन की कमी, प्रदूषण की रोकथाम आदि विषयों पर चर्चाएं हुईं, वहीं जैव विविधता व स्वच्छ टेक्नोलॉजी के हस्तान्तरण पर भी विशेष बल दिया गया ।

2. जोहान्सबर्ग सम्मेलन– 2002 में जोहान्सबर्ग में 'निरंतर विकास' पर विश्व शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया । इसमें प्रमुख भूमंडलीय पर्यावरणीय समस्याओं को उजागर किया गया तथा जनमानस का ध्यान पर्यावरणीय क्षय की ओर आकर्षित किया गया ।

3. स्टॉकहोम सम्मेलन– 5–6 जून, 1972 में स्टॉकहोम में संयुकत राष्ट्र संघ द्वारा 'मानव पर्यावरण' पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया । जहाँ पर भारत की पूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाँधे ने र्यावरणीय नीति घोषित की । वहीं पर 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस घोषित किया गया ।

4. नैरोबी सम्मेलन– 10–18 जून, 1982 में नैरोबी ;केन्याद्ध सम्मेलन 'मानव पर्यावरण' पर आयोजित किया गया । इस सम्मेलन में 10 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा वहाँ पर एक विशेष चार्टर जारी किया गया जिसे नैरोबी घोषणा पत्रा के नाम से जाना गया जिसमें स्टॉकहोम कॉन्फ्रेन्स की योजनानुसार कार्य करके पर्यावरण सुरक्षा व सुधर के कार्यक्रमों को प्रभावी बनाने की नीति जारी की गई ।

मगध विश्वविद्यालय, बोध गया परिसर के छात्रा–छात्राओं से पर्यावरण के प्रति जागरूकता को ज्ञात करने के उद्देश्य से शोध्कर्ती ने अनुसूची का प्रयोग किया जिसके माध्यम से उनके दृष्टिकोण को ज्ञात किया गया।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि छात्रा–छात्राओं को पर्यावरण के प्रति चेतना का अभाव है तथा उनके चेतना को बढ़ाने के लिए उपरोक्त सुझावों को अमल में लाना बहुत आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण के लिए अनेक सम्मेलन एवं मीटिंग किये गये हैं। जिनकी जानकारी छात्रा–छात्राओं को देने के लिए यह आवश्यक है कि इसके लिए पद यात्रा रैली आदि का अभियान चलाया जाय।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रमा माथुर पर्यावरण अध्ययन, बहुआयामी प्रकृति।
2. जी.के. अग्रवाल समाजशास्त्रा ।
3. गुप्ता एवं शर्मा ग्रामीण समाजशास्त्रा ।
4. वीरेन्द्र सिंह नगरीय समाजशास्त्रा ।

*****